मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MVS–004

एम. ए. (वैदिक अध्ययन)

(एम. ए. वी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.वी.एस.-004 : निरुक्त एवं प्रातिशाख्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है।*

(ii) दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।

(iii) खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$4 \times 15 = 60$

1. निघण्टु एवं निरुक्त का परिचय लिखिए।
2. सिद्ध कीजिए कि निरुक्त ही भाषाविज्ञान के मूल में है।
3. यास्क का परिचय लिखिए।

4. निरुक्त का प्रयोजन विस्तार से लिखिए।
5. जातवेदस् एवं मातरिश्वन् के स्वरूप का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।
6. वैदिक स्वरों की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
7. वाजसनेयि प्रातिशाख्य का विस्तार से वर्णन कीजिए।
8. शौनक के वैदिक कार्यों का वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$4 \times 10 = 40$

1. निपातों का सोदाहरण परिचय लिखिए।
2. वैदिक उपसर्गों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
3. प्रातिशाख्य के प्रयोजन का वर्णन कीजिए।
4. वेद की अर्थवत्ता का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
5. द्युस्थानीय देवताओं के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
6. वैदिक स्वरों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
7. प्रातिशाख्यों के अनुसार व्यञ्जन सन्धि का वर्णन कीजिए।
8. प्रातिशाख्यों के अनुसार संज्ञाओं का सोदाहरण परिचय लिखिए।

× × × × ×